सच्ची शिक्षा

छात्रों में चिंतन की प्रक्रिया जागृत करने का सरल और व्यावहारिक तरीका

भामी वी. शेनॉय

मैं 45 साल बाद दो महीने के लिए कर्नाटक में मंगलौर के पास स्थित अपने पैतृक घर बंत्वाल लौटा। इस देहाती कस्बे के आसपास खेती-किसानी और बीड़ी बनाने के काम पर निर्भर छोटे-छोटे गांव हैं।

यहां ग्यारहवीं से स्नातक तक की पढ़ाई करवाने वाला एक कॉलेज है जो पांच साल पुराना है और जिसमें 1000 छात्र हैं। ज़्यादातर छात्र ऐसे हैं जिनके परिवारों में वे साक्षर होने वाली पहली पीढ़ी के हैं। करीब 99 प्रतिशत को पाठ्यपुस्तकों के अलावा पुस्तकें पढ़ने की आदत नहीं है। कई कारणों से इन छात्रों को प्रश्न पूछने की भी आदत नहीं है या उन्हें प्रश्न पूछने ही नहीं दिए जाते। हमारी सु-समीक्षित शिक्षा प्रणाली के चलते इन्हें किसी समस्या का हल खुद ढूंढने के लिए भी प्रेरित नहीं किया जाता, न ही टिप्पणियां करने के लिए प्रेरित किया जाता है। इस सख्त और शिक्षा विरोधी वातावरण में कुछ बदलाव लाने के लिए मैंने ''सच्ची शिक्षा'' नाम की सेमिनार श्रृंखला का प्रयोग किया। जून और जुलाई के बीच एस.वी.एस. कॉलेज में आयोजित यह श्रृंखला बहुत सफल सिद्ध हुई।

20 छात्रों के समूह के साथ मैंने 19 सत्र किए। छात्रों की संख्या जानबूझकर सीमित रखी गई थी ताकि सभी पर व्यक्तिगत रूप से ध्यान दिया जा सके। इनमें से 19 युवतियां थीं। सभी छात्र हमेशा समय पर आए जबकि चर्चा का विषय कभी भी ऐसा नहीं रहा जो अधिक अंक पाने में उनके लिए सहायक सिद्ध हो सके। इन सत्रों में विचारों के भटकने की भी गुंजाइश नहीं थी क्योंकि हरेक को या तो प्रश्न पूछना होता था या विविध विषयों पर टिप्पणी करनी होती थी। कुछ ही समय में छात्रों में काफी बदलाव दिखा। पहले बोलने में झिझकने वाले छात्र अब इतना बदल चुके थे कि श्रृंखला समाप्त होते-होते तो कई बार उन सभी के प्रश्नों के उत्तर दे पाने लायक समय ही नहीं बचता था।

चर्चा के विषय थे : जिद्दु कृष्णमूर्ति का दर्शन; भारत में गैरसरकारी संगठन आंदोलन; विश्व और भारत का इतिहास; भारत का ऊर्जा संकट; साम्यवाद, समाजवाद और पूंजीवाद; भारतीय समाज आइने में; राजनीति और भ्रष्टाचार; विश्व की प्रमुख लड़ाइयां; नागरिकों की जवाबदेही; आरक्षण; शिक्षा की स्थिति; प्रबन्धन के सिद्धान्त; विश्व के धर्म; विज्ञान, अंधविश्वास और आधुनिक गुरु; ऊर्जा और पर्यावरण; स्वतंत्रता के 60 साल बाद भी भारत के गरीब बने रहने के कारण; उदारीकरण, निजीकरण और वैश्वीकरण; भारत के विकास के परम आवश्यक घटक। मैं हर सत्र की शुरूआत में 15 मिनट विषय से परिचय कराने में लगाता। बाकी 75 मिनट छात्रों के प्रश्नोत्तर चलते।

समापन सत्र के दौरान हर छात्र को बताना था कि इस श्रृंखला से उसे क्या हासिल हुआ। एक छात्र ने कहा कि उसने इन 19 सत्रों में जो सीखा, वह 15 वर्ष की कक्षा की पढ़ाई से बढ़कर है। कई युवतियों ने कहा कि अब वे अखबार को आलोचनात्मक दृष्टि से पढ़ती हैं। कइयों ने कहा कि उनमें कक्षा ही नहीं, सरकारी कार्यालयों में भी प्रश्न पूछने की हिम्मत आई। सभी ने संघर्ष का कोई न कोई मुद्दा चुन लिया था- छुआछूत, जातिवाद, दहेज, स्त्री-पुरुष भेदभाव, बाल श्रम, प्लास्टिक प्रदूषण, जल संरक्षण, वृक्षारोपण, स्थानीय अस्पताल में सुधार।

कार्यक्रम पर नज़र रखने वाले कुछ अध्यापक चिन्तित थे कि छात्र सवाल पूछते रहेंगे तो वे पाठ्यक्रम पूरा कैसे कराएंगे लेकिन कुछ अध्यापक इस बात से खुश दिखे कि अब छात्र कक्षा में होने वाली चर्चाओं में अधिक भाग ले रहे हैं। श्रृंखला में भाग लेने वाली दो युवतियों ने बताया कि एक बैठक में जब उन्होंने एक छोटे बच्चे को लोगों को कॉफी परोसते देखा तो इसका विरोध किया और इसकी हिम्मत और समझ उन्हें इस सेमिनार श्रृंखला से मिली।

मुल्की, उडुपि, कुंदपुर, मूडबिदरी और करकल कस्बों के पांच कॉलेज अब तक इस कार्यक्रम को क्रियान्वित करने की इच्छा व्यक्त कर चुके हैं। इस कार्यक्रम में नाममात्र का खर्चा आता है और इसके लिए सरकार से अनुमति लेने की भी ज़रूरत नहीं पड़ती। राजनीतिक नेतृत्व तो न जाने कब शिक्षा प्रणाली को बदलेगा लेकिन हम इस कार्यक्रम के माध्यम से छात्रों को स्वतंत्र रूप से विचार करने और आलोचनात्मक प्रश्न पूछने की क्षमताओं को विकसित करने को प्रेरित कर सकते हैं। दरअसल हर कॉलेज में एक या दो समर्पित अध्यापक भी इस काम में जुट जाएं तो बहुत है। हर सुविज्ञ और समर्पित शिक्षाविद सेमिनार श्रृंखला से सीधे जुड़कर या खुद यह कार्य न कर पाने पर किसी को इसे संचालित करने के लिए प्रयोजित करके इस से संबद्ध हो सकता है।

भामी वी. शेनॉय *(bhamysuman@hotmail.com) ह्यूस्टन, टेक्सास स्थित तेल कम्पनी कोनोको फिलिप्स के सेवानिवृत्त प्रबन्धक हैं। वह मलिन बस्तियों में शिक्षा के लिए काम कर रही गैरसरकारी संस्था प्रथम के न्यासी और गैरसरकारी संस्था आंदोलन का प्रचार-प्रसार करने वाले न्यूजलेटर कैटलिस्ट के संपादक हैं। वह ह्यूस्टन और मैसूर, कर्नाटक आते-जाते रहते हैं।*

इस लेख के बारे में अपने विचार editorspan@state.gov पर भेजिए।